पाक में चुनाव: तमाशा 'जम्हूरियत' का

मनोज कुमार झा

पाकिस्तान के प्रेसिडेंट जनाब आसिफ अली जरदारी की यह बहुत बड़ी उपलब्धि रही कि वे पांच साल तक सरकार की गाड़ी खींच पाने में कामयाब रहे। 'मिस्टर टेन परसेंट' के नाम से मशहूर जनाब जरदारी की इस उपलब्धि के पिछे उनकी मरहूम बेगम साहिबा बेनजीर भुट्टों की भूमिका को जरा भी कम करके आंका नहीं जा सकता जो दुबारा सत्ता नशी होने की चाहत लिए अपने मुल्क में वापिस आई थीं, पर दहशतगर्दों की शिकार हो गईं। इसका फायदा जरदारी साहब को मिला और तमाम कठिनाइयों के बावजूद अपने 'बाप' अमेरिका की जी-हजूरी करते-करते उन्होंने अपना टर्म पूरा कर लगभग एक इतिहास तो रच ही दिया है।

यूरोप की हसीनों के साथ मौज-मस्ती में अपना वक्त गुजारने वाले साहिबज़ादे बिलावल भुट्टों को पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी का प्रेसिडेंट बना कर जनाब जरदार ने एक और रिकार्ड यह बनाया कि बिलावल चुनाव लड़ ही नहीं सकते, कम उम्र जो हैं।

बिलावल इससे नाखुश हैं, इस कदर कि माफ़िया दाऊद की राजधानी में जा पहुंचे, खूब आव-भाव की डॉन ने। सुरा-सुंदरी, सब कुछ। बिलावल की जान के पीछे पड़े हैं तालिबानी। सो उनके वालिद और फूफी मिन्तें कर, समझा-बुझा उन्हें वतन वापिस ले आईं। अब जनाब बूलेटप्रूफ कार में घूमते हैं और बुलेटप्रूफ मंच से भाषण बाजी करते हैं, पर क्या-क्या बोल जाते हैं, जनता समझ नहीं पाती। अंग्रेजी मां के दूध के साथ ही घुट्टी में पिलायी गई, ऑक्सफोर्ड में उर्दू सीख नहीं पाए, तन से और मन से जनाब पूरे इंग्लिस्तानी हैं, विदेश मंत्री हिना रब्बानी के साथ जिस्मानी प्यार का बुखार इस कदर चढ़ा कि वर्ल्ड मीडिया को अनायास हॉट स्टॉफ मिल गया, सोशल मीडिया में भी न्यूड डांस के सीक्वेंस चल पड़े। किसी तरह रंगीन मिज़ाज 'लैला-मजनूं' पर जनाब जरदारी साहिब ने शिकंजा कसा, किसी तरह इज़्जत बचाई। पर इस चुनाव में पाकिस्तान पीपुल्स पार्टी के प्रेसिडेंट बिलावल चुनाव लड़ने के लिए अयोग्य करार दिए गए हैं, इससे बड़ी कॉमेडी और क्या हो सकती है। इसे पाकिस्तान की पालिटिक्स की एक ट्रैजिडी भी कह सकते हैं। जनता नमक और दिया सलाई के लिये मुहताज है, वहीं पाकिस्तान में ऐसे-ऐसे सियासंदा भी है, जो चाहे तो मोदी का गुजरात ख़रीद लें। पर ये भारत जो इंडिया है, पाक से कम अमेरिका को प्यारा नहीं, अंबानी और टाटा जैसे दलाल जो हैं, सोनिया को उंगलियों पर नचाते हैं और मोदी जो प्रधानमंत्री पद के स्वयंभू दावेदार बने फिर रहे हैं, इन दलाल पूंजीपतियों के इशारे पर गंगनम् स्टाइल से भी धांसू स्टाइल में डांस करने को तैयार हैं, आदेश मिले तो गुजरात गुलाम कर देंगे। ख़ैरियत ये है कि गुजरात इंडिया नहीं, इंडिया इंडिया ही हावी है, जहां मुलायम, नीतीश, ममता जैसे क्षत्रपों के पास ताकत काफी है।

बहरहाल, बात पाकिस्तान की हो रही है। इस महीने चुनाव जो होने हैं। ख़ुदा का शुक्र है, जरदारी ने 'जम्हूरियत' को पांच साल तक खोटे सिक्के के मानिंद चलाया। इस दौरान 'जम्हूरियत' का नंगा नाच भी खूब हुआ। जनरल कयानी ने दूसरा मुशर्रफ बनने की कोशिश भी की, पर अपने 'बाप' अमेरिका के तलवे चाट-चाट जरदारी ने 'जम्हूरियत' को कायम रखा। दरअसल, क़ायदेआजम जिन्ना ने पाकिस्तान में जिस जम्हूरियत का ख़्वाब देखा था, वो कभी ताबीर में बदल ही नहीं पाया। बेशक, जिन्ना एक सेकुलर लीडर थे, नेहरू से जरा भी कम राष्ट्रवादी और आधुनिकतावादी नहीं थे, पर साम्राजी फ़रेब में इस कदर फंसे मुल्क आखिर टुकड़े-टुकड़े हो गया। अपने अंतिम दिनों में क़ायदे आजम गांधी की तरह ही एक हताश और पूरी तरह से टूट चुके राजनेता थे, वो समझ चुके थे कि इस मुल्क में जनता रोटी के लिये तरसेगी और वही हुआ। पाकिस्तान की जनता भूखी है, नमक खरीद पाना तक मुहाल, शक्कर की तो छोड़िए। लीडरान मौज उड़ा रहे हैं। किसी ने कोई टापू खरीद लिया है तो किसी ने अमेरिका में अरबों की हवेली बनवा रखी है। जरदारी ने इस्लामाबाद के पास जो 'बिलावल हाउस' बनवाया है, वो तो ग़ज़ब का है। अहाता ही इतना लंबा-चौड़ा कि हज़ारों-हज़ार लोग अपने खुदा की वहां इबादत कर सकते हैं और पाकिस्तान का ख़ुदा कौन है-अमेरिका, अमेरिका, अमेरिका। एक ख़ुदा और भी है-चीन। इन्हीं दो ख़ुदाओं के दम पर पाकिस्तान का वजूद कायम है।

पर क्या इस महीने जो चनाव होने जा रहे हैं, उसके बाद जरदारी फ़िर सत्ता में वापिस लौट पाएंगे? कहना मुश्किल है, क्या होगा? बड़ी उम्मीद लेकर परवेज मुशर्रफ साहब वतन वापिस लौटे थे, पर देशद्रोह के आरोप में मुकदमा चल पड़ा और इमरजेंसी थोप कर जिन जजों को उन्होंने बर्खास्त किया था, उन्होंने ही उन्हें गिरफ़्तार करन की सजा सुना दी। सज़ा सुनते ही मुशर्रफ अदालत से दौड़ते हुए भागे अपने सुरक्षाकर्मियों के साथ। अपने फॉर्महाउस पहुंच कर ही दम लिया। इधर, वकील और तमाशबीन नारे लगा रहे थे-'देखो-देखो, कौन भागा-गीदड़ भागा, गीदड़ भागा।' इस दृश्य के दुनिया भर के लोगों ने टी वी पर लाइव देखा। किसी तानाशाह रह चुके शख्स का ऐसा हश्र शायद ही हुआ हो। इससे बड़ी बेइज्ज़ती भला और क्या हो सकती है। अब मुशर्रफ साहब को उनके ही फार्महाउस में नज़रबंद कर दिया गया है, गिड़गिड़ाते रह गए, जमानत नहीं मिली। सोचा था, चुनाव लड़ेंगे, सत्ता पर क़ाबिज होंगे। लेने के देने पड़ गए। फिर भी, पाकिस्तान का न्यायतंत्र उन्हें किसी जेल में नहीं भेज पाया। वो पूरे ऐशो-आराम के साथ अपने फार्महाउस में ही क़ैद भुगतेंगे।

इधर, चुनाव लड़ने के योग्य उम्मीदवारों की पूरी जांच-परख हो रही है। पहले ये जांचा जाता था कि उम्मीदवार को कुरान की आयतें याद हैं, या नहीं। अब डिग्रियों की जांच-पड़ताल चल रही है। पता चला है कि कई फ़र्जी डिग्रीधारी हैं। ये क्या अच्छा नहीं कि हिंदुस्तान में चुनाव लड़ने के लिए उम्मीदवार का डिग्रीधारी होना जरूरी नहीं। इस बार पाकिस्तान में चुनाव कुछ अजब-गज़ब ही होगा। किन्नर भी मैदान में है। एक हिंदू महिला, जो बरसों तक किसी जमींदार के यहां गुलाम थी, पता नहीं कैसे मुक्त होकर चुनाव लड़ने जा रही है। और वो भी एक ऐसे इलाके से, जहां महिलाएं शायद ही कभी वोट देने जाया करती थीं। तो क्या पाकिस्तान में जम्हूरियत की कोई नई हवा चल पड़ी है।

पूर्व क्रिकेटर और 'प्लेब्वॉय' इमरान खान भी पूरे दम-खम के साथ चुनाव में उतर रहे हैं। उन्होंने पाकिस्तान को क्रिकेट का वर्ल्डकप दिलवाया था। इसी उपलब्धि का बखान कर रहे हैं और उस कैंसर हॉस्पिटल का भी, जो उन्होंने अपनी मां की याद में बनवाया है। क्रिकेट को भुना कर चुनाव की जंग जीतना चाहते हैं इमरान खान, पर इस 'प्लेव्वॉय' ने तो ऐशगाह में पड़े रहने के सिवा और कुछ किया ही नहीं, न जाने कैसी इंसाफ की तहरीक चला रहे हैं। न जनता भाव दे रही है, न ही मीडिया।

इधर, जनरल कयानी कह रहे हैं कि उनकी सेना सबसे अव्वल है। जनाब कयानी भी दूसरा मुशर्रफ बनने की हसरत रखते हैं। अमेरिका का हाथ पीठ पर है। पर मुशर्रफ का हश्र देखने के बाद कयानी को सबक लेना चाहिये।

ये अमेरिका को भली-भंति मालूम है कि तालिबान के दहशतगर्द पाकिस्तान की ज़मीं पे ही ट्रेनिंग पाते हैं और आईएसआई का सपोर्ट भी उन्हें हासिल है, वे जम्हूरियत की नौटंकी के खिलाफ हैं, और जरदारी, बिलावल, इमरान, सबकी जान के दुश्मन बने हुए हैं।

भूलना नहीं होगा, पाकिस्तान साउथ एशिया में अमेरिका का सबसे बड़ा सैन्य अड्डा है और भले ही उसकी अर्थव्यवस्था रसातल में जा रही हो, वह दुनिया की सबसे बड़ी सैन्य शक्ति है। पाकिस्तान में जम्हूरियत फले-फूले, ये उसके हक में नहीं। पाकिस्तान उसका वो बच्चा है, जिसे वह चांटे भी मारता है और फिर गाल भी सहला देता है। और जनता की क्या औकात लुटेरों के आगे! न पाकिस्तान में, न हिंदुस्तान में। पॉलिटिक्स अब सबसे बड़ी ह्यूमन कॉमेडी है।

सीरिया पर प्रत्यक्ष हमले के बहाने का आविष्कार

दो साल से सीरिया की असद सरकार के खिलाफ़ गृहयुद्ध को खूब हवा पानी देने के बाद भी जब असद की सत्ता को गिरा पाने में अमेरिकी साम्राज्यवादियों को सफलता नहीं मिल सकी है तो उन्होंने सीरिया पर प्रत्यक्ष हमला करने का एक नया बहाना ईजाद कर लिया है। अमेरिका के रक्षा सचिव चक हेगल ने अमेरिकी खुफिया सूत्रों विद्रोहियों से निपटने के लिये सीमित पैमाने पर रासायनिक हथियारों खासकर कैमिकल एजेन्ट सैरीन का इस्तेमाल किया है।

अमेरिकी विदेश सचिव का यह बयान निश्चित तौर पर सीरिया पर प्रत्यक्ष हमले के एक बहाने के बतौर समझा और देखा जा रहा है क्योंकि अमेरिका बार-बार सीरिया द्वारा प्रत्यक्ष हमला आमंत्रित करने की लक्ष्मण रेखा का उल्लंघन को आशंका जताता रहा है। जाहिर है इस लक्ष्मण रेखा का निर्धारण अमेरिका को ही करना था। अमेरिकी विदेश सचिव के ताता बयान के बाद सीरिया पर अमेरिका और नाटो शक्तियों द्वारा हवाई बमबारी की आशकायें बह गयी हैं। अमेरिका द्वारा सीरिया के पास रासायनिक हथियारों की मौजूदगी के आविष्कार के साथ इन हथियारों के इस्लामिक आतंकवादियों खासकर अल कायदा के हाथ लग जाने के खतरे का भी प्रचार अमेरिका व साम्राज्यवादी मीडिया कर रहा है। अत: सीरिया पर हमला कर उसके रासायनिक हथियारों के ठिकानों को नष्ट करना या कब्जे में लेना अमेरिका व नाटो शक्तियों का पवित्र कर्तव्य बन जाता है ताकि इन रासायनिक हथियारों तक इस्लामिक उग्रवादियों की पहुंच को रोका जा सके।

अमेरि द्वारा सीरिया पर हमले के लिये रासायनिक हथियारों का बहजा बनाना कोई नई बात नहीं है। इससे पूर्व इशक में सददाम हुसैन का तख्तापलट करने के लिये 2003 में उसने ईराक के पास व्यापक विध्वंस के हथियारों (वीपन्स ऑफ भास डेस्ट्रूक्शन, डब्लू.एम.डी.) की मौजूदगी तथा इनके अ तंक वादियों के हाथ लग जाने का बहाना बनाया था तथा संयुक्त राष्ट्र में सुरक्षा परिषद में रूस व चीन के वीरो के बावजूद इराक पर हमला कर दिया था। यह दीगर बात है कि इराक को तहस-नीस करने तथा खंडहरों में बदलने के दस साल बाद आज तक उन व्यापक विश्वंश वाले हथियारों को अमेरिका बरामद नहीं कर सका है। अमेरिका द्वारा सीरिया की असद सरकार को अपदस्थ

करने की बेचैनी बढ़ती जा रही है। अरब जगत में इराक ईरान व लोबिया के साथ सीरिया की असद सरकार एक ऐसी सरकार रही है जो अमेरिकी इशारों पर पूरी तरह नाचने को तैयार नहीं रही है। इराक सद्दाम शासन के प्रति भी सीरिया का रूख सहानुभूति का रहा है। एसे में अमेरिका के लिये अरब जगत में निष्कंटक अधिपत्य थायम करने के लिये असद सरकार का तख्ता पलट आवश्यक है। इसके लिये सीरिया की असद सरकार के खिलाफ़ जन असंतोष को भड़काकर तथा विद्रोहियों को हर तरीके से मदद पहुंचाकर वह लगातार प्रयासरत है। अमेरिका व यूरोपीय साम्राज्यवादियों द्वारा समर्पित इस युद्ध में अब तक 70000 से अधिक जानें जा चुकी हैं। अमेरिका व यूरोपीय साम्राज्यवादियों द्वारा समर्पित विद्रोही सशस्त्र इस्लामी गुट हैं। इन इस्लामी सशस्त्र गुटों को अमेरिका, यूरोपीय साम्राज्यवादियों सहित खाड़ी देशों के अमेरिकापरस्त शासकों का समर्थन प्राप्त नहीं है। दूसरी ओर असद सरकार को रूस व चीन का सहयोग व समर्थन प्राप्त है। दो साल के गृहयुद्धके बाद की इस्लामिक विद्रोही गुट सीरिया के महत्वपूर्ण आर्थिक राजनीतिक व सामारिक ठिकानों तक अपनी पहुंच बनाने में असफल रहे हैं तो दूसरी तरफ सीरिया के सैन्य बलों की असद के प्रति वफादारी में की कोई कमी नहीं आई है।

ऐसे में अमेरिका व यूरोपीय साम्राज्यवादी शक्तियों के लिये स्पष्ट है कि सीरिया में तख्तापलट करवाने के लिए प्रत्यक्ष हस्तक्षेप के बिना उनके सपने पूरे नहीं होंगे। अत: एक बार फ़िर सीरिया में विध्वंसक हथियारों की मौजूदगी और वैश्विक आतंकवाद के खतरे के तर्क के साथ उसे जोड़कर वे इराक का प्रयोग सीरिया में दोहराना चाहते हैं। सामंज्यवादी अपने अनुभवों से नहीं सीखते क्या? नहीं तो इराक व अफगानिस्तान में अपने हाथ जलाने व फजीहत झेलने के बाद वे सबक जरूर लेते। जहां तक विध्वंसक हथियारों व कैमिकल एंजेटों का मानवता के खिलाफ़ इस्तेमाल का सवाल है इसके इस्तेमाल का सबसे बड़े गुनहगार स्वयं संयुक्त राज्य अमेरिका रहा है। द्वितीय विश्वयुद्ध की समाप्ति वेला में सिर्फ़ विश्व में अपनी चौघ्राहट कायम करने की गरज से हिरोशिमा व नागासाको में परमाणु बम गिराकर लाखों लोगों को मौत की नींद सुलाने का कारनामा हो या वियतनाम युद्ध के समय कलचर बम नेपाल बम तथा खतरनाक कैमिकल एजेन्ट औरेन्ज का इस्तेमाल हो ये सब कारनामें अमेरिका ने किये है। इसका युद्ध में भी नाभिकीय विकिरण से युक्त हथियारों के इस्तेमाल के आरोप अमेरिकी साम्राज्यवादियों पर लगा। इराक युद्ध के दौरान इस्तेमाल हुई मिसायलो व अन्य युद्ध सामग्री के कबाड़ में विकिरण की मौजूदगी की बात सामने आ चुकी है। अत: सीरिया के खिलाफ हमला करने को उद्यत अमेरिका झूठे और मनगढ़ंत तथ्य व तर्क गढ़कर अपनी कुत्सित इच्छाओं को आगे बढ़ाना चाहता है। विश्व की न्याय प्रिय जनता को अमेरिकी सम्राज्यवादियों द्वारा सीरिया पर कब्ज़े के इरादों का भंडाफोर तथा भर्त्सना करनी चाहिये।

-नागेन्द्र मनराल